International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 811-812

ग्वालियर का तानसेन : एक महान संगीतकार

डॉ0 रविन्द्र कुमार
सहायक प्रोफेसर, इतिहास विभाग, राजकीय महाविद्यालय, महेन्द्रगढ, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

भारतीय संगीत के इतिहास में तानसेन का नाम स्वर्ण अक्षरों से लिखा गया हैं ये न केवल भारतवर्ष में ही सर्वविदित है, बल्कि सारे संसार में जाने–पहचाने जाते हैं। तानसेन के विषय में विशेषकर उनकी जन्मतिथि, जन्म स्थान, संगीत–शिक्षा इत्यादि के उल्लेख विभिन्न विद्वानों ने अलग–अलग दिए हैं। डॉ0 सरयू प्रसाद अग्रवाल ने तानसेन का जन्म 1588 संवत के लगभग ही हुआ होगा, ऐसा लिखा है।[1] शिवसिंह सेंगर ने भी तानसेन का जन्म संवत् 1588 लिखा है।[2] जो भी हो तानसेन भारत का महान् संगीतज्ञ था।

तानसेन का जन्म बेहट ग्राम में हुआ था। उनकी माता का नाम कमला और पिता का नाम मकरन्द था। तानसेन का शैशव किस प्रकार का रहा, इसका कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है।

तानसेन ने बाल्यकाल में अपने पिता जी से संगीत की प्रारंभिक शिक्षा ग्रहण की। तानसेन की शिक्षा के सम्बन्ध में कई किंवदन्तियाँ प्रसिद्ध है। द्विवेदी के अनुसार – 'कहा जाता है कि त्रिलोचन या तानसेन को सिंह की ध्वनि की अनुकृति करते हुए सुनकर मकरन्द को यह भरोसा हो गया कि तन्नम तत्समय प्रतिष्ठित ध्रुपद शैली का सफल गायक हो सकता है, अतः उसे पद रचना और गायन की शिक्षा देना प्रारंभ किया गया। एक मान्य अनुश्रुति यह कहती है कि तन्नू का यह सिंहनाद स्वामी हरिदास ने सुना और वे उसे अपने साथ ले गये तथा संगीत की शिक्षा दी।'[3]

डॉ0 सरयू प्रसाद अग्रवाल के अनुसार – 'दूसरी किंवदन्ती है कि स्वामी हरिदास मकरन्द पांडे के घनिष्ठ और परिचित लोगों में से थे। स्वामी हरिदास के वे परम भक्त थे और स्वामी ने तानसेन को गान–विद्या में पूर्ण कुशल कर दिया था।'[4] प्रसिद्ध इतिहासकार स्मिथ ने लिखा है कि – 'तानसेन सूरदास के घनिष्ठ मित्र थे और अपनी अधिकांश शिक्षा उन्होंने राजा मानसिंह द्वारा संस्थापित ग्वालियर के संगीत विद्यालय में प्राप्त की थी।'[5]

तानसेन गुणी और उच्चकोटि के कलाकार थे और इसी कारण वे जिस दरबार में रहे, वहीं उनको यथेष्ठ मान लिया। यह निर्विवाद है कि गायन के क्षेत्र में तानसेन चमत्कारी एवं प्रतिभासम्पन्न थे, तानसेन ने अपने ग्रंथ पदों में कृष्ण की रूपमाधुरी, मुरली–माधुरी, मान, भक्ति, बालक्रीड़ा आदि विषयों का आश्रय लिया है।[6]

तानसेन अपने जीवनकाल में कई गुणी पुरुषों, राजाओं और महाराजाओं के सम्पर्क में आये थे, जिनका वर्णन उन्होंने अपने गद्य पदों में किया है। राजा मानसिंह की दानशीलता का भी तानसेन ने वर्णन किया है जैसे –

'छत्रपति राजा मान, चिरंजीव रहो जौलौं ध्रुव भेरू तारौं
चहूं देस ते गनीजन आवत तुम पै धावत
पावत मनइच्छा सबही कौ जग उजियारौं
तुम से जो नहीं तौ, कासैं जाय कहूं और,
वही आजि कीरत करै मोपै ीच्छा करन हारौ।
देत करोरन गुनी जनन कौं अजा चक कीने, 'तानसेन' प्रतिपारौ।'

महाराजा मानसिंह की राजसभा में तानसेन कब आया था, इसके विषय में द्विवेदी जी का कहना है कि – 'यह अब सुनिश्चित है कि वे उस सभा में मानसिंह के जीवन के अंत तक रहे और फिर आगे मानसिंह के युवराज और उत्तराधिकारी विक्रमादित्य की राजसभा में सन् 1526 ई0 तक रहे।'[7]

तानसेन संगीतज्ञ होते हुए भी पद लेखक हैं। उन्होंने अनेक पदों की रचना की है। उनकी संगीतिक रचना हिंदी काव्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। ऐसा ज्ञात होता है कि तानसेन के संगीत गुणों की प्रशंसा ने उनके उच्च कवित्व गुण को नष्ट कर दिया है।

तानसेन उन व्यक्तियों में थे जिनकी कीर्ति आज भी भारत के एक छोर से दूसरे छोर तक फैली हुई है। आज इतने वर्ष व्यतीत हो चुके है, पर उनकी संगीत कला की ख्याति अक्षुण्ण है। डॉ0 सरयू प्रसाद अग्रवाल के अनुसार – 'तानसेन एक महान् कलावन्त थें वे ध्रुपद गायन में विशेष कुशल थे। उनके रचित ध्रुपद आज भी प्रायः सभी संगीतज्ञ गाते हैं। उन्होंने कुछ श्रुत–मधुर एवं मनोरंजक नवीन रागों का भी आविष्कार किया, उदाहरणार्थ मियां की मल्हार, दरबारी, कान्हरा आदि। इन रागों के अध्ययन से इनके संगीत विषयक पाण्डित्य का परिचय मिलता है।'[8] अबुलफजल ने आइने अकबरी में लिखा है कि – 'मियां तानसेन ग्वालियर निवासी जिनके समान गायक पिछले एक हजार वर्ष से नहीं हुआ।'[9]

अबुलफजल ने लिखा है कि तानसेन की मृत्यु 26 अप्रैल 1589 को हुई थी। तानसेन के मरने पर अबुलफजल ने लिखा है कि उस युग का आनन्द धूमिल हो गया। सम्राट अकबर ने कहा था – 'तानसेन की मृत्यु ने मधुर तान को मौन कर दिया।'[10]

1523 ई0 में ग्वालियर से तोमरों का राज्य समाप्त हो गया। परन्तु उनका संगीत राष्ट्रव्यापी हो गया। तोमर वीणा छिन्न–भिन्न हो गई, परंतु उसकी स्वर–लहरी हिन्दू–मुसलमान , सुफी संत सबके मर्म को स्पर्श करती रही। संगीत के क्षेत्र में न काफिर रहा, न म्लेच्छ वरन् सब घुलमिलकर भारतीय संगीत के पोषक हो गए। ध्रुपद की गायकी उत्तर दक्षिण सभी हिन्दू हिन्दू मुस्लिम दरबारों में फैल गई।

संगीत और भाषा के क्षेत्र में हिन्दू मुस्लिम संस्कृति का समन्वय प्रारंभ हुआ, बैजू, बक्शू, कर्ण, स्वामी, हरिदास तथा महमूद लोहंग की सरस्वती, समान रूप से पूज्यनीय बन गई।

ग्वालियर की संगीत परम्परा तोमरों के राजसत्ता में आने से पूर्व ही परवान चढ़ने लगी थी। तोमरों ने संगीत परम्परा को बल प्रदान किया। तानसेन ने संगीत को गति प्रदान कर इसे चारों और फैलाया। महाराजा डूंगरसिंह ने संगीत को नवीन आयाम प्रदान किए और उसको परिष्कृत किया। मानसिंह तोमर को संगीत दूध में मिला, साथ ही वे संगीत प्रेमी भी थे, इसलिए उन्होंने संगीत को इतना प्रभावशाली और गतिशील बना दिया कि वह ग्वालियर की भौगोलिक सीमाएं लांघकर भारतव्यापी हो गया। तानसेन ने अपनी भूमिका पृष्ठ भूमि से ही तैयार कर दी थी। जिसकी महक ग्वालियर में आज भी देखने को मिलती है।

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, सरयूप्रसाद, अकबरी दरबार के हिन्दी कवि, पृ0 101
2. सेंगर, शिवसिंह, शिवसिंह सरोज, पृ0 429
3. द्विवेदी, हरिहर निवास – तानसेन, पृ0 6
4. अग्रवाल, सरयू प्रसाद, पूर्वो0, पृ0 103
5. स्मिथ, बिंसन्ट, अकबर दि ग्रेट मुगल, पृ0 435
6. अग्रवाल, सरयू प्रसाद, पूर्वो0, पृ0 111
7. द्विवेदी, तानसेन, पृ0 8
8. अग्रवाल, सरयू प्रसाद, पूर्वो0, पृ0 158
9. अबुलफजल, अकबरनामा (बेबरिज का अनुवाद), भाग–3, पृ0 816
10. अबुलफजल, पूर्वो, पृ0 816